प्रातः क्लास 16-10-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप बैठ समझाते हैं। रूहानी बच्चे जानते हैं हम अपने लिये फिर से अपना दैवी स्वराज्य स्थापन कर रहे हैं। क्योंकि तुम ब्रह्माकुमार-कुमारियां हो ना। ब्रह्माकुमार-कुमारियां ही सिर्फ यह बात जानती हैं। यह भूलो मत। परन्तु माया भूला देती है। तुम देवता बनने चाहते हो परन्तु माया तुमको घड़ी2 ब्राह्मण से शूद्र बना देती है। शिव बाबा को याद न करने से ब्राह्मण शूद्र बन जाते हैं। अभी बच्चों को यह मालूम है हम अपना राज्य स्थापन कर रहे हैं। जब राज्य स्थापन हो जायेगा फिर यह पुरानी सृष्टि न रहेगी। सभी को इस विषय विश्व से शान्तिधाम भेज देते हो। यह है तुम्हारी भावना। परन्तु तुम जो कहते हो बाकी यह दुनिया आठ वर्ष में खत्म हो जानी है तो जरूर लोग विरुद्ध करेंगे। शूद्र सम्प्रदाय कहेंगे ब्रह्माकुमारियां फिर यह क्या कहती हैं। विनाश, विनाश कहते ही रहते हैं। तुम जानते हो इस विनाश में ही खास भारत और आम दुनिया की भलाई है। यह बात दुनिया नहीं जानता। विनाश होगा तो सभी चले जायेंगे मुक्तिधाम। अभी तुम ईश्वरीय सम्प्रदाय बने हो। पहले आसुरी सम्प्रदाय के थे। अभी ईश्वरीय सम्प्रदाय के बने हो। तुमको ईश्वर खुद कहते हैं मामेकं याद करो। यह तो बाप जानते हैं सदैव याद में कोई रह नहीं सकते हैं। सदैव याद में रहे तो विकर्म विनाश हो जाये फिर तो कर्मातीत अवस्था हो जाये। नहीं। सभी पुरुषार्थी हैं। जो ब्राह्मण बनेंगे वही देवता बनेंगे। ब्राह्मण के पीछे हैं देवतायें। बाप ने समझाया है ब्राह्मण है चोटी। जैसे बच्चे बाजोली डोलते हैं ना। पहले2 आता है माथा, चोटी। ब्राह्मणों को हमेशा चोटी होती है। तुम हो ब्राह्मण। पहले तो शूद्र अर्थात पैर थे। अभी बने हो ब्राह्मण चोटी। फिर देवता बनेंगे। देवता कहते हैं मुख को, क्षत्री कहते हैं भूजा को, वैश्य कहते हैं पेट को, शूद्र कहते हैं पैर को। शूद्र अर्थात क्षुद्र। तुच्छ बुधि। तुच्छ बुधि उनको कहते हैं जो बाप को नहीं जानते हैं। और बाप की ग्लानी करते हैं। तब बाप कहते हैं जब जब भारत में धर्म की ग्लानी होती है ... जो भी भारतवासी हैं उन्हों से ही बात करते हैं। यदा यदा हि ... बाप आते भी हैं भारत में। और कोई जगह नहीं आते। भारत ही अविनाशी खण्ड है। बाप भी अविनाशी है। वह कब भी जन्म मरण में नहीं आते। बाप अविनाशी आत्माओं को ही आकर सुनाते हैं। यह शरीर तो है विनाशी। अभी तुम शरीर का भान छोड़ अपने को आत्मा समझने लगे हो। बाप ने समझाया था होली पर कोकी पकाते हैं तो कोकी सारी जल जाती है। धागा नहीं जलता है। आत्मा कब विनाश नहीं होती। इस पर यह मिसाल है। यह कोई भी मनुष्य मात्र को मालूम नहीं है कि आत्मा अविनाशी है। वह तो कह देते हैं आत्मा निर्लेप है। बाप कहते हैं नहीं। आत्मा ही अच्छे वा बुरे कर्म करती है। इस शरीर द्वारा। एक शरीर छोड़ दूसरा शरीर ले फिर कर्म भोग भोगती है। तो वह हिसाब किताब ले आई ना। इसलिये इस दुनिया में मनुष्य अपार दुःख भोगते हैं। आयु भी कम हो आती है। परन्तु मनुष्य इतने दुःखों को भी सुख समझ बैठे हैं। तुम बच्चे कितना कहते हो निर्विकारी बनो। फिर भी कहते विख विगर तो हम रह नहीं सकते हैं। क्योंकि वेश्यालय के शूद्र सम्प्रदाय हैं। क्षुद्र बुधि हैं। तुम बने हो ब्राह्मण। चोटी। चोटी तो सबसे उच्च है। देवताओं से भी उच्च है। तुम देवताओं से भी उच्च हो इस समय। क्योंकि बाप के साथ हो। बाप तुमको पढ़ाते हैं। ओबीडियन्ट सर्वेन्ट है ना। बाप बच्चों का ओबीडियन्ट सर्वेन्ट होता है ना। बच्चे को पैदा कर, उनकी सम्भाल पढ़ाई बड़ा करके बनाकर फिर बूढ़ा होता है। तो सारी मिलकीयत बच्चों को देकर खुद गुरु के किनारे जाकर बैठते हैं। वानप्रस्ती बन जाते हैं। मुक्तिधाम जाने लिये गुरु करते हैं। परन्तु वह मुक्तिधाम तो जा नहीं सकते। तो मां बाप दोनों ही बच्चों की सम्भाल करते हैं। समझो मां बिमार है, बच्चे टटी कर देते हैं तो बाप को उठाना पड़े ना। तो बाप मां बच्चों के सर्वेन्ट ठहरे ना। सारी मिलकीयत बच्चों को दे देते हैं। देहद का बाप भी कहते हैं मैं जब आता हूं, तुम तो बड़े हो ना। तुमको बैठ शिक्षा देता हूं। तुम शिव बाबा के बच्चे बनते हो तो अपने को ब्रह्माकुमारी कहलाते हो। इनसे पहले शूद्र कुमार-कुमारी थे। वेश्यालय में थे। अभी तुम वेश्यालय में रहने वाले नहीं हो। यहां कोई विकारी रह न सके। हुकुम नहीं। तुम हो ब्रह्माकुमार-कुमारियां। -

152 16-10-68

यह स्थान है ही ब्रह्माकुमार-कुमारियों के रहने लिये। शुद्र कुमार-कुमारी पतितों को रहने का हुकुम नहीं है। ब्रह्मा-कुमार-कुमारियों ही रह सकती हैं। बहुत अनारी बच्चे हैं जो यह भी समझते नहीं हैं। शुद्र कहा जाता है पतित विकार में जाने वाले को। उन्हों को यहां रहने का हुकुम नहीं है। आ ही नहीं सकते। इन्द्र सभा की भी बात है ना। इन्द्र सभा तो यह है ना। जहां ज्ञान बरसात होती है। कोई ब्रह्माकुमारीने अपवित्र कुमारी को छिपा कर बिठायातो दोनो को सराप मिल गया किपत्थर बन जाओ। सच्चा2 इन्द्रप्रस्त यह है ना। यह कोई शुद्र कुमार कुमारियों का सत्संग नहीं हैं। साधु सन्त महात्मा आदि इस समय सभी पतित हैं। तब तो घड़ी2 जाते हैं गंगा स्नान करने। जहां मेला लगता है जाते हैं मेला होने। सभी को ले जाते हैं कि इसमें स्नान करने से हम पवित्र बन जावेंगे। पवित्र तो होते हैं देवतायें। शुद्र होते ही हैं पतित। देवतायें पावन होते हैं। शुद्र पतित को बाप आकरपावनदेवता बनाते हैं। अभी तुम पतित से पावन देवता बन रहे हो। तो यह हो गई इन्द्रसभा। अगर विकार में कोई विकारी को ले आते हैं तो बहुत सज़ा मिल जाती है। पत्थर बुधि बन पड़ते हैं। यहां पारस बुधि बन रहे हैं ना तो उनको(जो ले आते हैं)भी सराप मिल जाता है। तुम विकारियों को छिपा कर क्यों ले आई। ईन्द्र(बाप) से भी पूछा नहीं। तो कितनी सजा मिल जाती है। यह है गुप्त बातें। अभी तुम देवता बन रहे हो। बड़ी कड़े कायदे हैं। अवस्था ही गिर पड़ती है। एकदम पत्थर बुधि बन पड़ते हैं। हे भी पत्थर बुधि हो। पारस बुधि बनने का पुरुषार्थ करते ही नहीं हैं। यह गुप्त बातें हैं जो तुम बच्चे ही समझ सकते हो। यहां ब्रह्माकुमारियां रहती हैं। उन्हों को ही ईश्वर देवता बना रहे हैं। अर्थात पत्थर बुधि से पारस बुधि बना रहे हैं। तो बाप बी2 बच्चों को समझाते हैंकोई भी कायदे न तोड़े। 5भूत उनको पकड़ लेंगी। काम क्रोध .... यह 5बड़े भूत हैं आग कल्प के। तुम तो यहां भूतों को भगाने आये हो। आत्मा जो शुध पवित्र थी वह पतित दुःखी अशुधरोगी बन पड़ी है। इस दुनिया में अथाह दुःख है। बाप आकर ज्ञान का वरसा करते हैं। तुम बच्चों द्वारा ही करते हैं। तुम्हारे लिये ही स्वर्ग रचते हैं। तुम ही ज्ञान योग बल से देवता बनते हो। बाप खुद नहीं बनते हैं। बाप तो सर्वेन्ट है ना। टीचरभी स्टुडन्ट का सर्वेन्ट होता है। सेवाकर पढ़ाते हैं। टीचर कहते हैं हम तुम्हारा मोस्ट ओबीडिएन्ट सर्वेन्टहूं। कोई बैरीस्टर ईंजीनियर आदि बनाते हैं तो सर्वेन्ट हुआ ना। वैसे ही गुरु लोग भी रास्ता बताते हैं सर्वेन्ट बन। मुक्तिधाम ले जाते हैं तो सेवा करते हैं ना। परन्तु आजकल तो कोई गुरुलोग ले जा नहीं सकते। क्योंकि वह भी पतित हैं। एक ही सद्गुरु सदा पवित्र है। बाकी गुरु लोग तो सभी पतित हैं। यह सारी दुनिया ही पतित है। पावन दुनिया कहा जाता है सतयुग को, पतित दुनिया कहा जाता है कलियुग को। सतयुग के ही पूरा स्वर्ग कहेंगे। त्रेता में भी दो कला कम हो जाती है। यह बातें तुम बच्चे ही समझकर और धारण करते हो। दुनिया के मनुष्य तो कुछ भी नहीं जानते। ऐसे ऐसे भी नहीं सारी दुनिया स्वर्ग में जावेंगी। जो सतयुग त्रेता में कल्प पहले थे, वही भारतवासी फिर आयेंगे और सतयुग त्रेता में देवता बनेंगे। वही फिर द्वापर से अपने को हिन्दुकहलावेंगे। यूं तो हिन्दु धर्म में अब तक भी जो आत्मायें ऊपर से उतरती हैं वे भी अपने को हिन्दु कहलाती हैं। लेकिन वे तोदेवता नहीं बनेंगे न स्वर्ग में आवेंगे। वे फिर भी द्वापर के बाद अपने2 समय पर उतरेंगे और अपने को हिन्दु कहलावेंगे। देवता तो तुम ही बनते हो। तुम ही बनते हो जिनका आदि से लेकरअन्त तक पार्ट है। यह ड्रामा में बड़ी युक्ति है। बहुतों को बुधि में नहीं बैठता। तो उच्च पद भी नहीं पा सकते हैं। यह है सत्य ना0 की कथा। वह तो झूठी कथायें सुनाते हैं। उससे कोई ल0 वा ना0 बनने थोड़ेही हैं। वहां तो तुम प्रेक्टीकल में बनते हो। वह है सभी झूठी कथायें। कलियुग में है ही झूठ। सच्च खण्ड बाप बनाते हैं, फिर झूठ खण्ड रावण बनाता है। फिर सभी विकार प्रवेश हो जाते हैं। रावण-राज्य में ही भारतवासी जब गिरते हैं तो विकारी बन जाते हैं। भारत में गुप्तराज्य, रावण राज्य कितना समय चलता है यह भी शुद्र सम्प्रदाय नहीं जानते हैं। तुम ब्राह्मण जानते हो इन में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। शुद्र तो कुछ भी नहीं जानते। तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं। क्योंकि पढ़ाई है। कोई बहुत थोड़ा पढ़ते हैं तो फेल -

हो पढ़ते हैं। यह तो एक ही बार पढ़ाई हो सकती है। फिर तो पढ़ना ही मुश्किल हो जावेगा। शुरू में पढ़कर गये हैं तो संस्कार वह लेकर गये हैं फिर आकर पढ़ते हैं। नाम रूप तो बदल जाता है। आत्मा को ही सारा 84 का पार्ट मिला हुआ है तो भिन्न2 नाम रूप देशकाल बजाती रहती है। इतनी छोटी आत्मा इनको कितना बड़ा शरीर मिला हुआ है। आत्मा तो सभी में होती है ना। इतनी छोटी आत्मा हाथी में है तो इतने छोटी मच्छर में भी है। कितनी छोटी आत्मा है! उनको इन आंखों से देखा नहीं जा सकता। यह भीसमझ की बात है। जो अच्छी रीति समझ सकते हैं वही माला का दाना बन सकते हैं। बाकी तो जाकर पाई पैसे का पद पावेंगे। अभी तुम्हारा यह फूलों का बगीचा बन रहा है। पहले तुम कांटे थे। जंगल में बन्दर ही रहते हैं। रावण राज्य में सभी है कांटे। एक दो को कांटा लगाते रहते हैं। बाप कहते हैं काम विकार का कांटा बहुत खराब है। यह आदि मध्य अन्त दुःख देते हैं। दुःख का मूल कारण ही है काम। काम को जीतने से ही जगतजीत बनेंगे। इसमें ही बहुतों को मुश्किलात पील होती है। बड़ा मुश्किल पवित्र बनते हैं। जो कल्प पहले बने थे वही बनेंगे। समझा जाता है कौन पुरुषार्थ करउच्च ते उच्च देवता बनेंगे। नर से ना० नारी से ल० बनते हैं ना। नई दुनिया में स्त्री पुरुष दोनो ही पावन थे। अभी पतित हैं। तमोप्रधान बन गये हैं। जो सतोप्रधान थे वही तमोप्रधान आकर बने हैं। फिर दोनो को पुरुषार्थ करना है। यह ज्ञान सन्यासी दे न सके। वह तो करप्टिव हैं। नहीं तो वास्तव में सन्यासियों को गीता पढ़ने का हुकुम नहीं है। वह धर्म ही अलग है निवृति मार्ग का। यहां भगवान तो स्त्री पुरुष दोनो को ही पढ़ते हैं। दोनो को कहते हैं अभी शुद्र से ब्राह्मण बन फिर ल०ना० देवता बनना है। सभी तो नहीं बनेंगे। ल०ना० की भी डिनायस्टी होती है। इन्होंने राज्य कैसे लिया यह कोई भी नहीं जानते। समझते भी हैं सतयुग में इन्हों का राज्य था। परन्तु फिर सतयुग को लाखों वर्ष कह दिया है तो यह मूर्खता हुई ना। बाप कहते हैं अभी मूर्ख हो। जंगली जानवर हैं। यह है ही कांटों का जंगल। वह है फूलों का बगीचा। तुम जंगल के कांटे थे। जानवर से भी बदतर थे। अभी फिर बाप तुमको देवता बनाते हैं। यह है कांटों का जंगल। तमोप्रधान मनुष्य बन्दर से भी बदतर हैं। मनुष्य में 5 विकार होने कारण उनको बन्दर से भी बदतर कहा जाता हैं। बाकी शास्त्रों में जो कथा आदि लिख दी हैं वह सभी है गलत। लंका कोई सिर्फ यह भारत ही नहीं है लंका तो सारी दुनिया है। पहले नम्बर में वैश्यालय भारत बनता है। अभी तुम फूल बन रहे हो। आगे कांटे थे। बन्दर से भी बदतर थे। सुरत भव्य की परन्तु सीरत जानवर मिसल थी। एक दो दैत्य कहते हैं ना। यह सभी हैं असुर। फिर देवता बनेंगे। यहां आने से पहले तुम असुर थे। अभी तुम असुर से देवता बन रहे हो। कौन बनाते हैं? बेहद का बाप। देवताओं का राज्य तो दुसरा कोई था नहीं। यह भी अभी तुम समझते हो। शुद्र आसुरी बुधि मनुष्य समझ न सके। जो नहीं समझ सकते हैं उनको ही असुर कहा जाता है। असुर पतित को ही कहा जाता है। यह है ब्रह्माकुमार-कुमारियों की सभा। अगर कोई शैतानी का काम करते हैं तो अपने को ही सरापित कर देते हैं। पत्थर बुधि बन पड़ते हैं। सोने की बुधि नर से नारायण बनने वाली तो है नहीं। सब्बू सबूत भी मिल जाता है। थर्ड क्लास का पास-दासियां जाकर बनेंगी। दास-दासियां बनने तो है ना। अभी भी राजाओं पास दास दासियां तो है ना। यह भी 16-10-68 मु० 3 नायन किनकी दबी रहेंगी धूल में किनकी सारे बाय(आग) .... आग के गोले भी आवेंगे जो जहर के गोले भी आवेंगे। मौत आना तो जरूर है ना। ऐसी2 तैयारियां कर रहे हैं जो कोई मनुष्य शस्त्र, की वा हथियार आदि की दरकार न रहेंगी। वहां से ही बैठे2 ऐसे बम्ब छोड़ेंगे उनकी हवा ऐसी फैलेगी तो झट खलास कर देंगी। ½ सो करोड़ का विनाश होनहार। कम बात है क्या! सतयुग में कितने थोड़े होते हैं। बाकी सभी चले जावेंगे शान्तिधाम। जहां हम सभी आत्मायें रहती हैं। सुखधाम है स्वर्ग। दुःखधाम है यह नर्क। यह चक्र फिरता रहता है। पतित बनने से दुःखधाम बन जाता है फिर बाप सुखधाम में ले जाते हैं। परमपिता परमात्मा अभी सर्व की सदगति कर रहे हैं। तो खुशी होना चाहिए ना। मनुष्य डरते हैं। यह नहीं समझते मौत से ही गति सदगति होती-

154 16-10-68

है। तुम बच्चे जानते हो। यह तो जानते हो स्कूल में नम्बरवार पढ़ते हैं। कोई तो फुल पास हो स्कालरशिप लेते हैं। कोई नापास हो जाते हैं। तो नापास होने वालों की आसुरी कर्तव्य ही होते हैं। उन में समीमूत हैं। देह-अभिमान का भूत, क्रोध का भूत, लोभ-मोह का भूत हैं। यह भी छूटने में टाईम लगता है। आधा कल्प से यह सभी विकार प्रवेश होते हैं। बाप आकर फिर से एक जन्म में हीदेवता बनाते हैं। तुम बच्चे जानते हो हम इस समय संगम पर हैं। सतयुग में होते हैं थोड़े देवी-देवतायें। बाकी सभी इतने अनेकधर्मों के मनुष्य खलास हो जावेंगे। फिर सतयुग में एक धर्म देवी देवता ही रहेंगे। आत्मा ऊपर से आती रहती है ना। वह है निराकारी दुनिया। आत्मा साकार में आती है तो नाम पड़ता है जीवात्मा। बापतो सदैव निराकारी दुनिया में ही रहते हैं। वह आते ही हैं एक बार, नई दुनिया का स्थापना पुरानी दुनिया का विनाश करने। बच्चों को ही नालेज देते हैं। परन्तु जो पत्थर बुद्धि हैं उनको यह नालेज देने में कितना मुश्किल होता है। तुम बड़े2 म्युजियम आदि खोलते हो। बड़े2 वजीर अमीर आते हैं, वह तुम्हारा सुनते ऐसे हैं जैसे कि जंगल के बन्दर। कहेंगे यह आप का ज्ञान बहुत ही अच्छा है परन्तु हमको फुर्सत नहीं। अरे कल करते2 काल खा जावेगा फिर कब सुनेंगे। बैठे2 मौत आ जाता है। परन्तु है जैसे बिल्कुल जानवर बुद्धि। बाप है भी गरीब निवाज़। भारत है सबसे गरीब। कंगाल। भारत जितना कर्जा और कोई नहीं उठाते हैं। इतनी भूख कहां नहीं है। भारत ही बहुत साहुकार था। अभी तो बहुत गरीब है। फिर बाप साहुकार बनाते हैं। गरीबों को ही साहुकार बनाते हैं, साहुकार फिर भी गरीब हो जावेंगे। यहां का यह धन आदि तो सभी अल्प काल के लिये हैं। यह भी सभी खत्म हो जावेगा। किनकी दबी रहेंगी धूल में .... सफली होंगी उनको जो दान-पुन करते हैं सतयुग के लिये। सुदामा ने भी चावल मुट्ठी भर दी तो 21 जन्मों के लिये महल मिली ना। अभी पतित मनुष्य दान-पुण्य करते हैं, धर्मशाला वा कालेज आदि बनाते हैं, उनको कोई 21 जन्मों लिये नहीं मिलता है। अल्प काल लिये एक जन्म में मिलता है। क्योंकि इन्हायोग नहीं है। अभी तो बाप डायरेक्ट देते हैं। बाप आकर स्वर्ग बनाते हैं। कहते हैं यह सभी खत्म हो जावेंगे। स्वर्ग में तो सिर्फ इन देवी देवता का राज्य था। जो अभी स्थापन हो रहा है। यह सभी फिर न रहेंगे।

मूल बात बाप बच्चों को समझाते हैं शिव बाबा को याद करो तो जन्म-जन्मान्तर के पाप भस्म हो जावेंगे। ऋषि-मुनि आदि सभी कहते हम नहीं जानते। नेती-नेती कह देते। वह समझते हैं कल्प की आयु लाखों वर्ष है। बाप कहते हैं 5000वर्ष। न जानने वाले को नास्तिक कहा जाता है। जानने वाले को आस्तिक कहा जाता है। यह है ही नास्तिकों की दुनिया। तुम हो आस्तिक क्योंकि तुम बेहद के बाप को जानते हो। श्री श्री शिव बाबा की मत पर चलने से तुम श्रेष्ठ देवता बनेंगे। और कोई बना न सके। जगत का गुरु एक ही है तो वही सारी जगत की सद्गति करते हैं। बाकी जो भी श्री श्री 108 जगद्गुरु कहलाते हैं वह सभी हैं ठग। जिनके लिये ही शास्त्रों में नाम रखा गया है हिरण्यकश्यप जैसे दैत्य हैं। जो अपने को परमात्मा कह पूजा कराते हैं। बाप कहते हैं सभी में परमात्मा है नहीं। सभी में 5भूत माया की है। सभी में परमात्मा कैसे हो सकता। सभी बाप ही बाप हो जावेंगे। भाई-भाई हो तब तो भाईयों को बाप से वरसा मिले। सभी बाप तो हो न सकें। शिवोहम का नारा लगा बैठते हैं फिर भाईयों जाकर लोटी चढ़ाती है। यह है सबसे बड़े दैत्य। हिरण्यकश्यप। कहां में सभी की सद्गति करने वाला वह कहां दुर्गति करने वाला। घर-बार छोड़ कर जाते हैं। स्त्री विधवा बन जाती। बच्चे आरफन बनके बने पढ़ते। तो यह पाप हुआ ना। वह पाप उन पर चढ़ता रहता है। दूसरे तरफ फिर सन्यास कर पवित्र बनते हैं। तो थोड़ा उसका फल मिल जाता है। एक तरफ पाप करते हैं दूसरे तरफ पावन बनते हैं। यह सारी दु0 निधणकी है। धणी-धोणी कोई है नहीं। घर2 में झगड़ा मारा मारी लगी पड़ी है। ऐसे सतयुग में नहीं होता। पवित्रता पर दीवा जगाते हैं। अभी तुम आत्माओं का ज्योत जग रही है। पहले आत्मा जब सतोप्रधान थी तो उन में ताकत थी। अभी है तमोप्रधान। जैसे मोटर से बैटरी डल हो खत्म हो जाती है तो खड़ी हो जाती है। तुम्हारी आत्मा में बाकी थोड़ा जाकर रही है। तुम्हारा बैटरी 100% फुल थी तो सतोप्रधान थी। फिर चलते2 खलास हो गई है। अच्छा बच्चों को गुडमार्निंग। आप नमस्ते।